 ISSN: 2582-6530

मिजो लोककथा

माऊरुआङी

अनुवादक- डॉ. कैथी रौह्लूपुई

बहुत समय पहले की बात है। एक गाँव में एक दंपत्ति रहते थे। उनकी एक बेटी थी, जिसका नाम माऊरुआङी था। माऊरुआङी को उसकी माँ बहुत प्यार करती थी। अच्छे से अच्छे और स्वादिष्ट भोजन दिया करती थी। एक दिन माऊरुआङी के माता-पिता लकड़ी लेने जंगल गए। काफी दूर निकलने के बाद उन्हें एक टूटा-फूटा पुल मिला। इसी पुल से उन्हें गुजरना था। पत्नी ने कहा "जिस पुल से हमें गुजरना पड़ रहा है वह पुल काफी पुराना एवं कच्चा है, जब हम वापस लौटेंगे तो लकड़ी के कारण हमारा वजन भी बढ़ जाएगा, कितना खतरनाक हो सकता है।" पति ने उत्तर देते हुए कहा- "वापस लौटते वक्त हम दोनों में जो इस पुराने पुल से गुजरने से डरेगा उसे नीचे नदी में धक्का दे दिया जाएगा। वे पुल पार करने के बाद लकड़ी इकट्ठा करने लगे। लकड़ी को बाँधते वक्त पति ने अपने लिए हल्का और पत्नी के लिए काफी भारी लकड़ी बाँध दिया। उसके बाद दोनों अपनी घर की ओर लौटने लगे।

घर में रह रही माऊरुआङी ने बेसब्री से इंतजार करते हुए कहा- "मेरे माँ-बाप को लकड़ी लेने गए कितनी देर हो गई।" पिताजी को अकेले घर वापस लौटते देखा लेकिन कहीं माँ दिखाई नहीं दे रही थी। पिता से पूछा- पिताजी मेरी माँ कहाँ है? पिताजी ने बड़ी सरल लहजे में जवाब दिया- "नदी में मेरी पगड़ी धो रही है।" थोड़ी देर बाद माऊरुआङी ने फिर दुबारा पूछा- "मेरी माँ कहाँ है? उसने कितनी देर लगा दी? माऊरुआङी बेसब्री से अपनी माँ के लिए टकटकी लगाई रही लेकिन कहीं माँ वापस घर आने का नाम ही नहीं ले रही थी। जब पिता से माँ के बारे में पूछती तो पिता तरह-तरह का बहाना बनाकर बात को टाल देते थे। अंधेरा होने लगा। रात के खाने का समय हो गया उन्होंने फिर पिता से पूछा- "मेरी माँ कहाँ रह गई, कितनी देर हो गई अभी तक वापस नहीं लौटी। अंत में पिता ने बताया कि "हम दोनों ने तय किया था वापस लौटने वक्त जो इस पुल से गुजरने से डरेगा उसे नीचे नदी में धक्का दे दिया जाएगा। तुम्हारी माँ पुल से गुजरने से डरने लगी इसलिए मैंने उसे नीचे नदी में धक्का दे दिया" यह सुनकर माऊरुआङी को बहुत दु:ख हुआ, रो-रो कर बेहाल हो गई। जैसे-तैसे वह दु:खद रात उन्होंने बिताई।

माऊरुआङी जब सुबह उठी, अंगीठी जलाना चाहा, तो देखा कि अंगीठी पूरी तरह बुझी हुयी थी। पिता ने कहा "पड़ोसी से आग मांग लाओ।" उनकी पड़ोसन विधवा थी, उनकी एक बेटी थी जिसका नाम बीङताई था। माऊरुआङी ने पड़ोसन से कहा- "बुआ, क्या अपनी अंगीठी जलाने के लिए आपकी थोड़ी सी आग ले सकती हूँ?" पड़ोसन ने कहा- "तुम अपने पिताजी से मेरी शादी की मंजूरी नहीं दोगी तो मैं तुम्हें अपनी आग नहीं दूँगी।" माऊरुआङी दौड़ी-दौड़ी अपने घर वापस आई और पिताजी को घटित घटना विस्तार से

बताया। पिता ने कहा- "क्या पता हम उनसे शादी कर लें।" माऊरुआङी फिर पड़ोसन के घर गई और पिता द्वारा दिए गए जवाब उन्हें सुनाया। फिर पड़ोसन खुशी-खुशी आग देने को राजी हो गई।

कुछ दिनों बाद माऊरुआङी के पिताजी ने बीङताई की माँ से शादी कर ली। शादी के शुरू-शुरू में तो बीङताई की माँ ने माऊरुआङी पर काफी स्नेह लुटाया, परंतु जैसे-जैसे समय बीतता गया दिनोंदिन माऊरुआङी पर जुल्म एवं अत्याचार बढ़ने लगा। बीङताई पर ही अपना सारा स्नेह लुटाने लगी। माऊरुआङी को अच्छा खाना भी नहीं देती थी, केवल धान के छिलके की खिचड़ी बनाकर देती थी। माऊरुआङी ऐसा खाना नहीं खा सकती थी, इसलिए वह भूख से व्याकुल रहती थी। भूखी होकर भी कठिन से कठिन कार्य माऊरुआङी से करवाया जाता था। बीङताई से कुछ भी कार्य नहीं करवाया जाता था। वह बैठे-बैठे जोर-जोर से हँसती रहती थी। जैसा मन करता वैसे ही रहती थी। सोना, बैठना और घूमना यही बीङताई का काम था। कुछ दिनों बाद पौष्टिक भोजन न मिलने से माऊरुआङी काफी दुबली-पतली व कमजोर हो गई। माँ की याद में रोती रहती थी। एक दिन वह उस नदी में गई जहाँ उसकी माँ गिरकर मर गई थी। उसकी माँ एक बड़ी मछली (मिजो भाषा में थाइछोनीनू कहते हैं) का रूप धारण करके उसके सामने आई। माऊरुआङी ने उसे अचरज भरी निगाहों से देखा। माँ ने माऊरुआङी से पूछा- "मेरी प्यारी बेटी। तुम यहाँ क्या करने आई हो? मैं तुम्हें बहुत याद करती हूँ। जो पल हम दोनों ने साथ बिताया है उसे मैं भूली नहीं हूँ। तुम्हारे पिताजी कैसे हैं? क्या उन्होंने दूसरी शादी कर ली? तुम दोनों अब कैसे रहते हो?" माऊरुआङी को बहुत खुशी हुई जब उसने यह जाना कि वह बड़ी मछली उसकी माँ है। उसने माँ को सब कुछ बता दिया कि पिताजी ने दूसरी शादी कर ली है और सौतेली माँ उस पर अत्याधिक अत्याचार करती है। ढंग का खाना न देकर केवल धान के छिलके से बनी खिचड़ी ही देती है। यह सुनकर माँ को बहुत दु:ख हुआ, उसने माऊरुआङी को मछली और तरह-तरह का पकवान देकर भरपेट भोजन कराया। माँ ने माऊरुआङी से कहा "जब भी तुम्हें भूख लगे तुरंत मेरे पास आ जाना।"

माऊरुआङी बेमन से अपने घर वापस लौट आई। घर पहुँचने पर सौतेली माँ ने कटु स्वर से माऊरुआङी से कहा "तुम इतनी देर से कहाँ गई थी? घर में कितना काम पड़ा है, लो अपना खाना खा लो" कहते हुए धान के छिलके से बनी खिचड़ी उसके सामने रख दिया, लेकिन माऊरुआङी ने उसे खाने से इनकार कर दिया। इस तरह वह रोज सौतेली माँ द्वारा दिये जाने वाले खाने से इनकार करने लगी। चुपके से नदी में जाकर माँ से मिलती थी। उसकी माँ तरह-तरह के स्वादिष्ट भोजन अपनी बेटी को रोज खिलाती थी। रोज ऐसे स्वादिष्ट भोजन खाने के कारण माऊरुआङी दिनोंदिन मोटी होने लगी। यह देखकर सौतेली माँ को काफी आश्चर्य हुआ, क्योंकि वह जानती थी कि उसके द्वारा दिए जाने वाला खाना खाकर कोई मोटा नहीं हो सकता था। वह सोचने लगी कि "माऊरुआङी हमसे छुपकर कुछ चीजें जरूर खाती होगी, क्योंकि मैं तो इसे धान के छिलके की खिचड़ी ही देती हूँ, लेकिन यह लड़की दिनोंदिन मोटी होती जा रही है। अब तो इसका राज ढूँढ़ना ही पड़ेगा कि यह लड़की मुझसे छुपकर क्या खाती है? और मुझे उस राज को नष्ट करना ही होगा।" यह सोचती हुई वह अपनी बेटी बीङताई से कहने लगी- "बीङताई आज चुपके से माऊरुआङी का पीछा करना और देखना कि यह लड़की हमसे छुप-छुपके क्या खाती है और कहाँ खाती है।"

शाम होते-होते माऊरुआङी को भूख लगने लगी। रोज की तरह ही वह अपनी माँ से मिलने नदी में गई। माँ ने उसे स्वादिष्ट भोजन कराया। बीङताई ने दूर से यह नजारा चुपके से देखा। घर आकर सारा किस्सा अपनी माँ को सुनाया। “मैंने सब-कुछ अपनी आँखों से देख लिया है कि किस कारण माऊरुआङी दिनोंदिन मोटी होती जा रही है। पिता ने माऊरुआङी की माँ को नदी में धकेलकर उसकी हत्या कर दी थी, वह बड़ी मछली बनकर अपनी बेटी को रोज स्वादिष्ट भोजन खिलाती है। ऐसा स्वादिष्ट भोजन खाकर माऊरुआङी क्यों मोटी नहीं होगी?” सौतेली माँ ने बीङताई की प्रशंसा करते हुए कहा- “मेरी प्यारी बेटी कितनी चतुर हो गई है कि माऊरुआङी के दिनोंदिन मोटी होने का राज ढूंढ़ निकाला। अब देखना माऊरुआङी को कैसे दुबली-पतली करती हूँ।” उसके बाद सौतेली माँ ने माऊरुआङी के पिता से कहा- “आप सभी गाँव वालों से अनुरोध कीजिए कि पूरे गाँववालों को एक साथ बड़ी मछली को पकड़ने के लिए जाना चाहिए।” फिर सभी गाँव वालों को बुलाया गया, सभी लोग बड़ी मछली को पकड़ने के लिए अपने-अपने घर से निकल पड़े।

जब यह बात माऊरुआङी को पता चला तो वह दौड़कर माँ के पास नदी में गई। उसने माँ से कहा- “माँ तुम्हें पकड़ने के लिए गाँव वाले आएंगे। जब मैं कहूँ, माँ तुम नदी की सतह में जाओ तो तुम नदी के स्रोत की ओर चली जाना। यदि मैं कहूँ नदी के बीच में तो आप नदी के किनारे चले जाना। यदि मैं कहूँ नदी के किनारे तो आप नदी के बीच में चली जाना। कुछ देर बाद सारे गाँव वाले सामूहिक रूप से मछली पकड़ने आ गए। बड़ी मछली को पकड़ने की थान लगाकर आए थे। माऊरुआङी ने जैसा माँ को समझाया वैसा ही करती जा रही थी। वे सभी थाईछोनीनू को पकड़ने में असफल हुए। अंत में खिन्न होकर गाँव वालों ने कहा- “इस लड़की के कारण ही हम लोग थाईछोनीनू को पकड़ नहीं पा रहे हैं अतः उसके मुँह में कपड़ा ठूँसो और इसे कहीं और ले चलो।” गाँव वाले माऊरुआङी को वहाँ से कहीं दूर ले गए। फिर क्या था, माँ अकेली पड़ गई, इसलिए गाँव वालों ने उसे पकड़ लिया। बड़ी मछली को टुकड़े-टुकड़े कर आपस में बाँट लिए। माऊरुआङी ने अपनी माँ यानी थाईछोनीनू के माँस को खाने से इनकार कर दिया और कहा- “मुझे तो नहीं खाना, बस मुझे बड़ी मछली की काँटे या हड्डियाँ ही दीजिए।” सारे काँटे उसे दे दिए गए। माऊरुआङी ने माँ की हड्डियों अर्थात काँटों को एक बर्तन में रख दिया। उसके ठीक तीन दिन बाद बर्तन को खोल कर देखा तो वह सारे काँटे बहुत सुंदर और बहुमूल्य मोतियों में तब्दील हो गए। माऊरुआङी ने उन्हें धागे में पिरोकर माला बनाकर उसे अपने गले में डाल लिया। सुंदर माला देखकर बीङताई की माँ ईर्ष्या से जल-भुन गई। उसने माऊरुआङी से कहा- “बीङताई को भी दे दो।” सौतेली माँ की बात मानकर जब उसने बीङताई को माला पहनने के लिए दिए, जैसे ही वह माले को पहनने लगी वह सुंदर और बहुमूल्य माला कोयले में बदल गई।

माऊरुआंगी ने बड़ी मछली के दिल को भी जमीन में गाड़ दिया था। उसमें भी एक सुंदर फूल (जिसे मिजो भाषा में ‘फुनचोङ’ कहा जाता है) में तब्दील होकर कई बड़ी-बड़ी डालियाँ निकाल आयी। बेचारी माऊरुआङी को अब भी सौतेली माँ द्वारा विभिन्न अत्याचार एवं यातनाएँ देना जारी था। उसे फिर से धान के छिलके की खिचड़ी ही खाने को मिलती थी। फिर से माऊरुआङी दिनोंदिन दुबली-पतली होने लगी, किन्तु जब उस फुनचोङ पेड़ में फूल निकलने का समय आया तो पूरा पेड़ फूलों से लद गया। फुनचोङ के फूल का

रस बहुत ही मीठा होता है अर्थात मधु भरा हुआ था। उन मधुओं या रसों का पान माऊरुआङी करती और उसी से अपनी भूख-प्यास मिटाती थी। चूंकि माऊरुआङी का हाथ ऊपर तक पहुँच नहीं पाता था, इसलिए यह गीत गाकर फुनचोङ पेड़ अर्थात माँ को संबोधित करती थी:-

"माँ अपनी डालियों को नीचे झुका, झुका/मेरी प्यारी माँ नीचे झुक जा, झुक जा।"

इस गीत से डालियाँ नीचे की ओर झुक जाती थी और माऊरुआङी पेट भर फुनचोङ फूलों के रस को चूसती थी। एक बार फिर उसके शरीर में निखार आने लगा। सौतेली माँ यह देख जल-भुन गई और सोचने लगी माऊरुआङी को जरूर कोई खिला-पिला रहा है, जिसके चलते वह अच्छी दिखने लगी है। फिर उसने बीङताई को पीछा करने के लिए कह दिया। पीछा करते-करते वह उस राज को फिर जान गई और माँ से कहा- "माँ, हमारे घर से कुछ दूरी पर फुनचोङ का बहुत बड़ा पेड़ है जिस पर खूब सारे फूल लदे हैं। उन्हीं फूलों का रस-पान कर माऊरुआङी की सेहत अच्छी होने लगी है। यह सुनकर सौतेली माँ ने पति अर्थात मऊरुआङी के पिता से कहा- "हमारे घर से कुछ दूर पर फुनचोङ का पेड़ है उसे काट कर गिराना है। अपनी मदद के लिए पड़ोसियों को बुलाओ।" माऊरुआङी के पिता न चाहते हुए भी पत्नी के डर से इनकार नहीं कर सका और पड़ोसियों को मदद के लिए बुलाया। गांव वालों ने अपनी-अपनी कुल्हाड़ी का धार तेज किया और फुनचोङ पेड़ काटने निकल पड़े। माऊरुआङी भी पीछे-पीछे चलने लगी। वहाँ पहुँचकर उसने पेड़ से कहा-

"माँ मजबूत बन, मजबूत बन/ मेरी अच्छी, प्यारी माँ मजबूत बन, मजबूत बन।"

जैसे ही गाँव वाले उस पेड़ को काटने लगते यही गाना माऊरुआङी दोहराती। इस तरह वे लोग उस पेड़ को काट पाने में असफल हो होते रहे। अर्थात पेड़ में शक्ति आ जाती वह और मजबूत हो जाता था। अंत में उन लोगों ने कहा, "जब तक माऊरुआङी यहाँ रहेगी, इस पेड़ को नहीं काट पाएंगे। इसलिए इसके मुँह में कपड़ा ठूँसो और इसे यहाँ से हटाओ।" इस तरह उसे दूर ले गए। उसके बाद पेड़ को काटने में कामयाब हो गए। माऊरुआङी की दशा पुनः दयनीय हो गई। बेचारी माऊरुआङी की हालत पहले जैसी हो गई पर जैसे-तैसे वह भी बड़ी हो गई और किशोर अवस्था में कदम रखना शुरू कर दिया। बीङताई भी किशोरी अवस्था में पहुँच गई। एक दिन सौतेली माँ ने कहा- "अब तो तुम दोनों बड़ी हो गई हो और अलग-अलग खेती-बारी संभालने के लिए सक्षम हो गई हो। अतः अब तुम दोनों अपना अलग-अलग खेती-बारी शुरू करो। हम देखते हैं कि कौन अच्छी तरह से देखभाल करता है। माँ के कहे अनुसार दोनों ने अपना अलग खेत बना लिया। झूम खेती के लिए जमीन तैयार कर लिया। (मिजोरम पहाड़ी इलाका होने के कारण यहाँ झूम खेती की जाती है। झूम खेती में बीज बोने से पहले खेत में पेड़-पौधों को काटकर सुखाया जाता है फिर जलाया जाता है) खेती के लिए जमीन तैयार होने पर माँ ने दोनों को बोने के लिए मक्के, कद्दू आदि के बीज दिए। सौतेली माँ ने माऊरुआङी को कीड़े लगे खराब बीज दिए। दोनों बीज लेकर खेत पहुँची। माऊरुआङी ने मेहनत करके बीज बोए, किन्तु बीङताई ने मक्के के आधे बीज को भुन कर खा लिया और खेत में बनी कुटिया में लेटी रही। बचे-खुचे बीज को भी नहीं बोए। शाम को दोनों घर लौटे। घर पहुँचते ही बीङताई ने मऊरुआङी की शिकायत

करते हुए माँ से कहा- “माँ जो मक्के के बीज आपने दिए थे, मैंने बहुत अच्छी तरह बोया, किन्तु माऊरुआङी ने तो कुटिया में सब भुनकर खा लिया और पूरे दिन लेटी रही।”

माँ ने “माऊरुआङी तुम बहुत आलसी हो” कहकर उसकी खूब पिटाई की। किन्तु माऊरुआङी चुप रही। वह रोज खेत में जाती और खेत को खूब साफ रखती। चूंकि बीङताई आलसी थी, इसलिए उसका खेत झाड़ियों से भरा था। माऊरुआङी के मक्के खूब बढ़ने लगे और खाने लायक हो गए। माऊरुआङी की कड़ी मेहनत रंग लाई।

एक बार हिंदी भाषी राजा को पत्नी की तलाश थी। पत्नी तलाश करने के लिए राजा ने अपने कई नौकरों को विभिन्न स्थानों में भेजा। चूंकि माऊरुआङी का खेत रास्ते के किनारे पड़ता था, इसलिए वे लोग वहाँ पहुँच गए। उन्होंने देखा कि माऊरुआङी के खेत में भरपूर मात्रा में मक्के और खीरे आदि फल-फूल रहे थे। राजा के नौकरों ने कहा- “हमें बहुत भूख लगी है, क्या हम आपके मक्के और खीरे खा सकते हैं? माऊरुआङी ने कहा- “जाकर खाईए, अच्छे-अच्छे को छाँटकर पेट-भर खाईए। वैसे आप लोग कहाँ जा रहे हैं?” नौकरों के दिल को माऊरुआङी की दयालुता और सहिष्णुता व अच्छाई ने जीत लिया। मन ही मन उसे राजा की पत्नी के लिए पसंद कर लिए। “हमारे राजा बहुत महान राजा हैं। उन्होंने हमें पत्नी की तलाश में जगह-जगह भेजा है। हमें आप पसंद हैं, क्या आप हमारे राजा की पत्नी बनना पसंद करोगी? यदि आप हमारे राजा की पत्नी बनेंगी तो आपको अच्छी-अच्छी चीजें खाने को मिलेगी और जो मर्जी कपड़े पहनोगी, जब चाहे सो सकोगी और किसी काम को करने की जरूरत नहीं पड़ेगी।” माऊरुआङी ने कहा, “मुझ जैसी नाचीज को यदि तुम्हारे राजा पसंद करेंगे तो मैं कैसे इनकार कर सकती हूँ। लेकिन मैं अपने माता-पिता की मर्जी के खिलाफ़ नहीं जा सकती।” नौकरों ने पूछा- “क्या आपको लगता है कि आपके माता-पिता हमारे राजा से शादी करने के लिए राजी नहीं होंगे?” माऊरुआङी ने जवाब दिया- “बिल्कुल नहीं होंगे। क्योंकि मेरी माँ सौतेली माँ है, उनकी बेटी का नाम बीङताई है। आप लोग ऐसा कीजिए कि मेरी माँ-बाप से मेरा हाथ न माँगकर बीङताई का हाथ माँग लीजिए। राजा से शादी के लिए मेरे माता-पिता राजी हो जाएँगे। बीङताई को ले जाते समय मैं आप लोगों को छोड़ने आऊँगी और गाँव की सीमा पर पहुँचने पर बीङताई को छोड़कर मुझे ले जाना।” नौकरों ने हामी भरी और कहा- “हम उसी तरह करेंगे जैसा तुमने कहा।” शाम हुई घर जाने का समय हुआ तो माऊरुआङी मेहमानों के साथ घर आयी। माऊरुआङी ने उन मेहमानों का जिक्र नहीं किया।

रात्रि के भोजन के बाद राजा द्वारा भेजे गए नौकर माऊरुआङी के घर पहुँच गए। बीङताई की माँ ने कहा- “आप लोग कहाँ से आएँ हैं और क्या चाहते हो?” उन्होंने आने का मकसद बताते हुए कहा- “राजा ने हमें उनकी पत्नी की तलाश में भेजा है। यदि आप लोग अपनी बेटी बीङताई को राजा की पत्नी बनाने के लिए राजी हों तो हमें आपकी बेटी पसंद है।” यह सुनकर माँ को बहुत खुशी हुई। “हमें अपनी बेटी का हाथ आपके राजा को देना मंजूर है। बीङताई, माऊरुआङी की तरह नहीं है, वह बहुत ही अच्छी और मेहनती है। शादी करके आप लोग बिल्कुल नहीं पछताएँगे।” माँ ने कहा, “माऊरुआङी जा, सूअरों का चारा ढूँढ़ते हुए बीङताई को छोड़ आओ। तुझ जैसे नालायक को तो कोई नहीं पूछता।”

माऊरुआङी (पुराने जमाने का बक्सा, जिसमें मिजो लोग सामान ढोते हैं) भी अपने साथ ले गई और उनके साथ रवाना हो गई। गाँव की सीमा पर पहुँचकर नौकरों ने बीङताई को काँटों के बीच ढकेल दिया और माऊरुआङी को अपने साथ ले गए। बीङताई अत्यंत लज्जित होकर बेबस अपने घर लौट आई। सारी बात सुनकर और बीङताई की हालत देखकर माँ को बहुत गुस्सा आया। किन्तु माऊरुआङी को पहले की तरह नहीं सता पाई और अपना गुस्सा यूं ही पी लिया। नौकर माऊरुआङी को साथ लेकर राजा के पास आ गए। राजा उन्हें देखकर बहुत खुश हुआ। राजा ने माऊरुआङी को नए-नए वस्त्र पहनने को दिए। माऊरुआङी अपनी मर्जी से स्वादिष्ट खाना खाकर आराम से अपना जीवन व्यतीत करने लगी। इसी बीच सौतेली माँ बदला लेने की ताक में थी और माऊरुआङी को जान से मारना चाहती थी।

एक बार बड़ी चालाकी से माऊरुआङी को मायके आने के लिए बुलाया। सौतेली माँ ने राजा को संदेश भेजा कि- "माऊरुआङी को कुछ दिनों के लिए मायके भेजो, मैं उसके लिए सूअर काटूँगी। (किसी खास मेहमान की खातिरदारी के लिए सूअर काटना मिजो समाज में अच्छा माना जाता है) माऊरुआङी सौतेली माँ की चाल न भाप सकी और अपने मायके चली आई। मायके पहुँचकर सौतेली माँ ने कहा- "माऊरुआङी कई दिनों बाद तुम आई हो, मेरे सिर में जुए देखो। (गाँव में स्त्रियों, लड़कियों का एक दूसरे के बालों को हाथ लगाना, जुए देखना आम बात है) माऊरुआङी ने माँ की बात मान ली और माँ का जुआ देखने लगी। फिर माँ ने कहा- "माऊरुआङ, मेरा क्लिप/काँटा (जिसे मिजोउ भाषा में 'दोहकिलह' कहा जाता है) घर के नीचे गिर गया है, उसे उठाकर लाओ।"

माऊरुआङी माँ के काँटे (जिसे बाल बाँधने के लिए सिर पर लगाया जाता है) को उठाने के लिए नीचे गयी। बहुत ढूँढ़ने पर भी उसे नहीं मिली तो उसने माँ से पूछा "माँ तुम्हारा काँटा कहाँ गिरा है?" असल में माँ झूठ बोल रही थी। माँ ने कहा- "वहीं कहीं होगा, ढंग से ढूँढ़ो।" माऊरुआङी ढूंढ़ती रही, किन्तु उसे कहीं नहीं मिला। जैसे ही माऊरुआङी नीचे झुकी सौतेली माँ ने उबला हुआ पानी उस पर उड़ेल दिया। बेचारी माऊरुआङी जलकर मर गई। माऊरुआङी के पार्थिव शरीर को उठाकर सौतेली माँ ने गाँव के सीमा में फेंक दिया। कुछ देर बाद शव को नीलगाय ने उठाया और फिर से जीवित किया। उसे अपने बच्चों की देखभाल करने के लिए अपने साथ ले आई। माऊरुआङी हर रोज नीलगाय के बच्चों की निगरानी करने लगी।

कई दिनों बाद भी माऊरुआङी के घर न लौटने पर राजा को उसकी चिंता हुई। राजा ने नौकरों को माऊरुआङी के मायके में कुशल-हाल पूछने भेज दिया। नौकर रानी की तलाश में निकल पड़े। मायके पहुँचकर नौकरों ने माऊरुआङी की सौतेली माँ से पूछा "माऊरुआङी कहाँ है?" सौतेली माँ ने बीङताई की ओर इशारा करते हुए कहा- "वो रही।" नौकरों ने कहा- "यह तो हमारी मालकिन लग नहीं रही है।" सौतेली माँ ने कहा- "क्या आप लोग अपनी मालकिन को भी नहीं पहचानते? पागल हो गए हो क्या?" इसे ले जाओ यही तुम्हारी मालकिन है।" वे अनमने मन में शक करते हुए बीङताई को उठाकर ले गए।

माऊरुआङी का अंगूठा छोटी सी चिड़िया बन गई थी, जब वे बीङताई को उठा रहे थे उनके पास उड़ कर आई और कह कर गाने लगी-

 ISSN: 2582-6530

“उसे मत उठाओ, मत उठाओ।/ माऊरुआङी नहीं है, बीङताई है/ उसे जमीन पर पटक दो।”

नौकरों ने बीङताई को नीचे ज़ोर-ज़ोर से पटका। इस तरह पूरे रास्ते पटकते रहे। इस पर बीङताई को बहुत गुस्सा आया। उसने छोटी चिड़िया को खूब गाली दी। जैसे ही बीङताई को उठाकर चलने लगते थे, छोटी चिड़िया पहले की तरह चिल्ला उठती थी। जब वे लोग राजा के पास लौट आए तो राजा ने कहा “मेरी पत्नी को क्या हुआ। यह तो बिल्कुल अलग लग रही है, इनकी नाक इतनी लाल-लाल क्यों है? मेरी पत्नी तो बहुत ही होनहार थी, कलाकार थी, शक दूर करने के लिए इससे कपड़ा/लुंगी बुनवाना चाहिए। यह सुनते ही नौकरों ने बीङताई से कहा “मालकिन आप अपने कठधरे (एक प्रकार के चरखे जैसा सूक्ष्म यंत्र) से कपड़ा बुनिए। बीङताई को पता नहीं था कि माऊरुआङी ने अपना कठधरा कहाँ रखा है, तो उसने कहा “मेरा कठधरा कहाँ है? नौकरों ने कहा, ‘मालकिन आपको क्या हो गया है, आपको नहीं मालूम नहीं कि आपका कठधरा कहाँ है? शायद आपने चारपाई के किनारे रखा था।” बीङताई ने कहा- “अरे हाँ, मैं तो भूल गयी थी।” लेकिन मेरा पानी (कपड़ा/लुंगी बुनते समय बीच-बीच में औरतें पानी लगाती हैं।) कहाँ है? नौकरों को सब चीज बतानी पड़ी। जब वह कपड़ा/लुंगी बुनने के लिए बैठी तो उसे बुनना नहीं आया। छोटी चिड़िया उड़कर आई और कहने लगी-

“निचले हिस्से, निचले हिस्से को ऊपर लाइए।

ऊपरी हिस्से, ऊपरी हिस्से को नीचे लाइए।

मैं कह रही हूँ, बार-बार कह रही हूँ।”

इस तरह चिड़िया चिल्लाती रही। बीङताई को बहुत गुस्सा आया और वह चिड़िया को लकड़ी से मारने लगी। चूंकि बीङताई को लुंगी बुनना नहीं आता था, अंत में हारकर उसे रख दिया और वहाँ से उठ गई।

एक दिन राजा के नौकर शिकार करने जंगल गए। उसी समय एक गुफा में माऊरुआङी नीलगाय के बच्चे को लोरी सुना रही थी-

“पहले तो, पहले तो मैं राजा की पत्नी हुआ करती थी।

अभी तो, अभी तो अपने मालिक नीलगाय के बच्चों को झूला झुलाकर लोरी सुना रही हूँ। आय.....ओ.....ए

नौकरों को यह आवाज मालकिन की आवाज लगी और गुफा के अंदर झाँककर देखा तो सचमुच उनकी मालकिन थी। उन्होंने पूछा- “वह इस अवस्था में वहाँ कैसे आई? और यहाँ क्यों हैं?” माऊरुआङी ने आप बीती सारी किस्सा सुनाया। नौकरों ने कहा “मालकिन हम आपको राजा के पास घर ले चलेंगे, फिर से आप हमारी रानी बन जाइए। उसने कहा “यहाँ अब मेरी मर्जी नहीं चल सकती। अब मेरा मालिक नीलगाय है। मैं उनके बच्चों की देखभाल करती हूँ। यदि आप लोग मुझे यहाँ से ले जाना चाहते हैं तो नीलगाय के वापस

घर लौटने पर उनसे बात कीजिए। उनके आज्ञा के बिना मैं कही भी नहीं जा सकती।" फिर नौकरों ने नीलगाय का इंतजार किया। जब नीलगाय घर लौटे तो वे घर के अंदर घुसने की हिम्मत नहीं जुटा पाया। नौकरों ने नीलगाय से कहा- अंदर आइए, हम आपसे कुछ कहना चाहते हैं- हम लोग आपका इंतजार कर रहे थे।" यह सुनकर नीलगाय गुफा के अंदर घुस गया। नौकरों ने कहा- "आपके बच्चों की देखभाल करने वाली यह औरत हमारी मालकिन है अर्थात हमारे राजा की पत्नी है। कृपया आप माऊरुआङी को हमें सौंप दीजिए, बदले में हम आपको मालामाल कर देंगे।" नीलगाय ने कहा- "वाकई में यह आप लोगों की मालकिन हैं, तो आप इन्हें वापस ले जाइए। रुपए-पैसे की कोई जरूरत नहीं है, बस बदले में मुझे कुछ केले दे दीजिए। उतना मेरे लिए काफी है।" यह बात सुनकर नौकरों ने नीलगाय को केले के गुच्छे दिए और वे खुशी-खुशी अपनी मालकिन को घर ले आए।

माऊरुआङी को देखकर राजा बहुत खुश हुए। पुनः उन्हें पत्नी का दर्जा दिया। राजा ने दोनों पत्नियों से कहा- "तुम दोनों लड़ो जो जीतेगा, उसे मैं अपनी पत्नी बनाऊँगा।" यह कहकर राजा ने माऊरुआङी को नए, मोटे कम्बल से लपेटा और तेज धार वाली तलवार दिया। बीङताई को पुराना और पतला कम्बल से लपेटा और लकड़ी का बना चाकू पकड़ा दिया। माऊरुआङी ने बीङताई से कहा, "तुम मुझ पर पहले वार करो।" यह सुनकर बीङताई ने माऊरुआङी पर वार किया माऊरुआङी को कुछ चोट नहीं लगी। माऊरुआङी ने बीङताई से कहा "अब मेरी बारी है, मैं तुझ पर वार करती हूँ कहकर माऊरुआङी ने बीङताई पर ज़ोर से वार किया। बीङताई दो टुकड़ों में बँट गई और वह मर गई।

बीङताई के मर जाने के बाद माऊरुआङी और राजा खुशी-खुशी रहने लगे।

(**लेखकीय परिचय**: *अनुवादक डॉ. कैथी रौह्लूपुई गवर्नमेंट आईज़ोल कॉलेज आईज़ोल, मिज़ोरम में सहायक आचार्य के पद पर कार्यरत हैं। यह लोककथा कुमत्लुआङ पुस्तक में संकलित है।)*

***